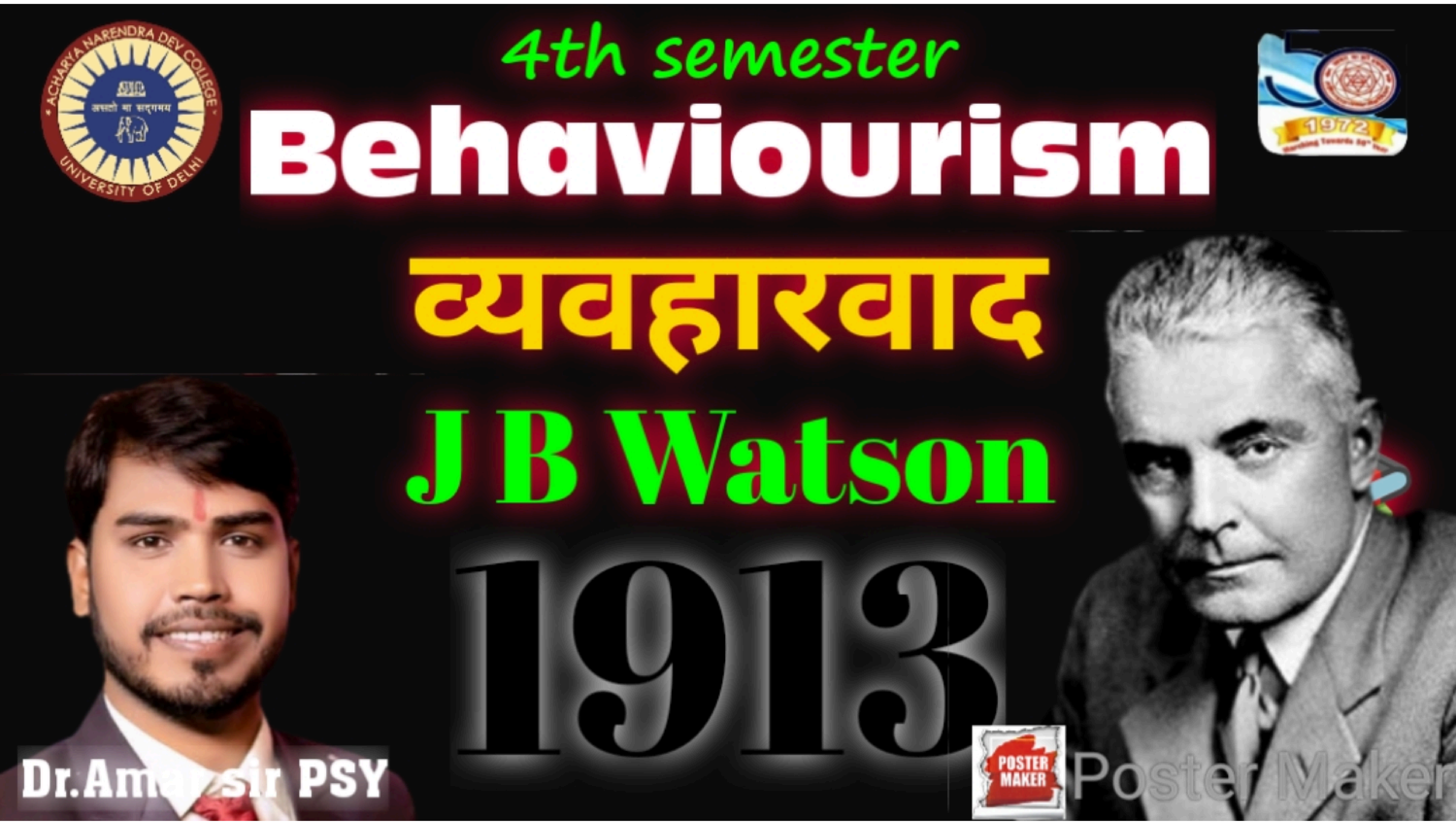
4th semester
Behaviourism
व्यवहारवाद
J B Watson
1913
sir PSY
POSTER MAKER
Poster Maker

Behaviouralism - व्यवहारवाद की स्थापना जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय मे मे 1913 ई० मे किया

व्यवहारवाद के जनक J.B watson (1913) है (John Broadus watson) इनका जन्म ग्रीनविली, दक्षिण कैरोलिना मे ~~हुआ~~ सन 1878 ई० मे हुआ, इनका जीवनी कोहेन ने 1979 मे लिखते हुए कहा है कि उनकी माता धार्मिक प्राकृतिक की थी और पिता मे इस प्रकृति का अभाव था, जिसके कारण माता-पिता का ~~के~~ द्वन्द्वात्मक स्थिति का प्रभाव बालक वाटसन पर काफी पड़ा। स्कूल के दिनो मे वाटसन एक औसत छात्र रहे, अपने गतिविधियो के कारण उन्हे दो बार पुलिस हिरासत मे भी लिया, वे लैटिन, ग्रीक, गणित, एवं दर्शनशास्त्र जैसे विषय का अध्ययन फुरमान विश्वविद्यालय मे किए और 1900 ई० मे उन्हे M.A की उपाधि मिल गई जॉन डिवी के साथ वे सिकांगो विश्वविद्यालय मे दर्शनशास्त्र का अध्ययन किए परंतु एंजिल ने उनमे प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के प्रति रुझान उत्पन्न किया, और एंजिल तथा डोनाल्डसन ने मिलकर उन्हे लोयब ~~के~~ साथ Ph.D करने के लिए उत्साहित किया और वे दोनो स्वयं मिलकर ~~के~~ Supervision के रूप मे Ph.D शोध प्रबंधन कार्य पुरा करने मे मदद किया। इनके शोध का शीर्षक था - Animal Education :- Psychical development of the white rat इस शोध प्रबंधन को मात्र 3 साल मे पुरा किया और 1903 ई० मे सिकांगो विश्वविद्यालय से Ph.D की उपाधि प्राप्त करने वाले सबसे छोटे मनोवैज्ञानिक थे।

वाटसन ने 1913 मे जॉन ~~के~~ हॉपकिन्स विश्वविद्यालय मे व्यवहारवाद की स्थापना की। उस समय वे मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष थे। इस सम्प्रदाय या स्कूल की स्थापना संरचनावाद और प्रकार्यवाद के विरोध मे हुआ, मनोविज्ञान का यह स्कूल काफी प्रबल रहा और इसी प्रबलता के कारण दूसरा एक और नाम दिया मनोविश्लेषणवाद।

~~J.B Watson ने कहा कि मैं मुझे एक~~

वाटसन व्यवहार को अनुवांशिक न मानकर पर्यावरणीय मानते थे, इन्होने कहा कि आप लोग मुझे एक दर्जन स्वस्थ्य बच्चा दे दीजिए मैं उसे चोर, डकैत, जज डा०, इन्जिनियर, कलक्टर, शिक्षक कुछ भी बना सकता हूँ, अपने व्यवहार के माध्यम से।

J. B Watson ने ~~मनो~~ प्रकार्यवाद और संरचनावाद के विरोध मे व्यवहारवाद की स्थापना किया जिसका प्रमुख विशेषता निम्नलिखित है/

1) मनोविज्ञान की परिभाषा :- वाटसन के अनुसार मनोविज्ञान प्राकृतिक विज्ञान की एक शाखा है जो मानव व्यवहार का अध्ययन करता है इन्होने व्यक्ति द्वारा कुछ कहना या बोलना को व्यवहार कहा है (ना चेतन, ना मानसिक कार्य, न मनोदैहिक प्रक्रियाएं)

2) मनोविज्ञान की विधियाँ :- वाटसन ने वैज्ञानिक विधि ~~के~~ के रूप मे अन्तर्निरीक्षण विधि को अस्वीकृत कर दिए थे/ क्योंकि इनके अनुसार मनोविज्ञान व्यवहार का वस्तुनिष्ठ विज्ञान है। वाटसन द्वारा मनोविज्ञान की चार विधिया है;

1) प्रयोग एवं प्रेक्षण
2) अनुबंधित प्रतिवर्त प्रविधि
3) परीक्षण कार्य विधि
4) शाब्दिक रिपोर्ट रिपोर्ट विधि

3) मनोविज्ञान की अभिग्रहित :- वाटसन द्वारा अपने व्यवहारवाद मे वर्णित मनोविज्ञान के लिए कुछ विशेष पूर्वकल्पनाएं को अभिग्रहित कहते है,

1) ग्रन्थीय स्रावों तथा पेशीयों से ही व्यवहार का निर्माण होता है इसीलिए व्यवहार को दैहिक-रासायनिक प्रक्रियाओं

के रूप मे मापा जाता है।

ii) अनुक्रिया तत्वों के मिलने से व्यवहार का निर्माण होता है।

iii) प्रत्येक प्रभावी उद्दीपक एक तात्कालिक अनुक्रिया उत्पन्न करता है इसीलिए व्यवहार का कारण निर्धारित होता है।

4) आँकड़ों की प्रकृति :- वाटसन ने हमेशा वस्तुनिष्ठ आँकड़ों पर बल दिया है और कहा है कि वैसा व्यवहार जो विशेष समय एवं स्थान मे किए जाते है जो पेशीय एवं ग्रंथीय गतियो के वस्तुनिष्ठ रिपोर्ट पर आधारित होते है। यही मुख्य आँकड़े है जिसे मनोवैज्ञानिको द्वारा विश्लेषण किया जाना चाहिए।

5) सम्बंध का नियम :- वाटसन ने अपने व्यवहारवाद मे बारम्बारता के नियम तथा नवीनता के नियम को सम्बंध के नियम के रूप मे काफी मान्यता दी है, बाद मे उन्होंने पैवलव द्वारा दिए गए अनुबंधन के नियम को महत्वपूर्ण माना है। और कहा है कि अनुबंधन सीखने का एक महत्वपूर्ण नियम है परंतु सम्बंध के नियम की सूची मे थॉर्नडाइक के प्रभाव नियम को सामिल नही किया है उन्होंने इसपर आपत्ति उठाते हुए कहा है कि इसमे आत्मनिष्ठा सम्मिलित है जिसे एक व्यवहारवादी कभी बर्दाश्त नही कर सकता।

6) चयन का नियम :- प्राणी को एक साथ कई सारे उद्दीपक उत्तेजित करते है, लेकिन उनमे से वह कुछ ही उद्दीपक के प्रति अनुक्रिया करता है तथा कुछ के प्रति अनुक्रिया नही करता है। अब प्रश्न है कि वह किस प्राणी ऐसे उद्दीपको का चयन किस तरह करता है, जिसके प्रति व्यक्ति अनुक्रिया करता है वाटसन का मत था कि प्राणी ऐसे उद्दीपको का चयन जन्मजात

के आधार पर करता है, अनुक्रिया तथा उचित उद्दीपक का चयन बहुत हद तक जन्मजात तथा अर्जित उद्दीपक अनुक्रिया पर निर्भर करता है।

7) मन-शरीर समस्या :- वाटसन द्वारा जो मन-शरीर समस्या पर जो विचार व्यक्त किए हैं वे व्यवहारवाद के एक प्रमाणक है वाटसन और सहयोगियों ने मन और मस्तिष्क चेतन को स्वीकार नहीं किया है, इन लोगों के अनुसार प्राणी में सिर्फ शरीर होता है मन नहीं। इन्होंने स्पष्ट कहा है कि चेतन एक ऐसी वस्तु है जिसे प्राणी ना तो देखता है, न स्पर्श करता है, न सूंघता है और न ही स्वाद लेता है यह ऐसी पूर्व कल्पना है जिसकी जाँच सम्भव नहीं है इनके अनुसार प्राणी मात्र शारीरिक अनुक्रियाएँ खासकर उद्दीपक के प्रति ग्रन्थियों एवं मांसपेशियों की अनुक्रियाएं महत्वपूर्ण होती हैं।

अतः वाटसन का व्यवहारवाद औपचारिक रूप से स्थापित एक स्कूल है जो न केवल मनोविज्ञान को परिभाषित किया है बल्कि विभिन्न समस्याओं पर अपना वैज्ञानिक विचार व्यक्त किया है।